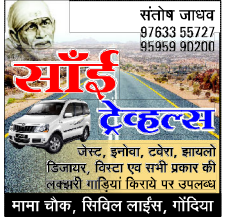

साप्ताहिक

बुलंद गोंदिया

खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 1 | अंक : 26 | गोंदिया : गुरुवार, 4 फरवरी 2021 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : रु. 5

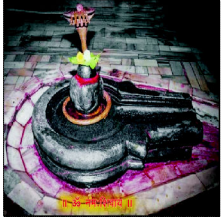

गोंदिया शहर में प्रवेश के नेशनल हाईवे मार्ग व नगर परिषद क्षेत्र के सभी मार्ग हुए गड्ढ़ामय

वाहन चालक परेशान, प्रतिदिन घटित हो रही दुर्घटनाएं

नवीन अग्रवाल– गोंदिया शहर में प्रवेश करनेवाले सभी प्रमुख मार्ग नेशनल हाईवे के अधिन हो चुके हैं। जिसका रख-रखाव नहीं होने तथा गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत के मार्गों की भी स्थिति बदहाल हो चुकी है। जिससे मार्गों पर बड़े-बड़े गड्ढों का निर्माण हो गया हैं। जिससे वाहन चालक को परेशानियां होने के साथ ही प्रतिदिन दुर्घटनाएं भी घटित हो रही है। जिससे कभी भी बड़ा हादसा घटित हो सकता है। गौरतलब है कि गोंदिया शहर में प्रवेश करनेवाले अधिकांश मुख्य मार्ग नेशनल हाईवे के अंतर्गत हो चुके हैं। जिसमें तिरोड़ा की ओर से आनेवाला कुड़वा नाका मार्ग, रिंगरोड़ बायपास, बालाघाट मार्ग, मरारटोली से जयस्तंभ चौक, जयस्तंभ चौक से फुलचुर नाके से गोरेगांव व आमगांव की ओर से जानेवाले मार्ग का समावेश है। लेकिन जब से नेशनल हाईके के अंतर्गत यह मार्ग गए है, तब से इनका रख-रखाव नहीं होने से मार्गों में बड़े-बड़े गड्ढों का निर्माण हो चुका है, इसके साथ ही गोंदिया नगर परिषद सीमा अंतर्गत आनेवाले मार्गों में भी वही स्थिति निर्माण हो चुकी हैं। जिसमें गुरुनानक गेट से कृषि उत्पन्न बाजार समिति की ओर जानेवाला मार्ग, सिविल लाईन, छोटा गोंदिया, गोविंदपुर, दुर्गा चौक से चांदनी चौक आनेवाला मार्ग जैसे अन्य मुख्य मार्गों की भी स्थिति बदहाल हो चुकी हैं। लेकिन इस ओर न तो नेशनल हाईवे व नगरपरिषद द्वारा ध्यान दिया जा रहा है, जिससे आए दिनों वाहन चालक दुर्घटना का शिकार होकर गंभीर रुप से जख्मी हो रहे हैं, यदि जल्द ही इस ओर प्रशासन द्वारा ध्यान नहीं दिया गया तो कभी भी बड़ा हादसा घटित हो सकता है। इस संदर्भ में जब सार्वजनिक बांधकाम विभाग के अभियंता अब्दुल जावेद से संपर्क किया तो उन्होंने जानकारी दी कि नेशनल हाईके के अंतर्गत आनेवाले मार्गों का सुधारकार्य नेशनल हाईवे द्वारा ही किया जाएगा। जब इस संदर्भ में नेशनल हाईके के नागपुर स्थित कार्यालय में अधिकारियों से संपर्क नहीं हो पाया। जिससे इस संदर्भ में नेशनल हाईवे से जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई।

शहर के मार्गों के प्रमुख गड्ढें

गोंदिया शहर व शहर में प्रवेश करनेवाले मार्गों में कुछ स्थानों पर जानलेवा गड्ढें बन चुके हैं। जहां से प्रतिदिन जिला प्रशासन व स्थानिय प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों तथा जनप्रतिनिधियों का भी आवागमन होता है। लेकिन इस ओर सभी की अनदेखी प्रश्न चिन्ह निर्माण कर रही हैं। जिसमें शहर का प्रवेश का मुख्य मार्ग फुलचुर नाके पर बड़े-बड़े गड्ढें बन चुके हैं, जयस्तंभ चौक से नए उडान पुल की ओर जानेवाले मार्ग पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर प्रतिमा के पिछे, मरारटोली बालाघाट रेलवे चौकी, बायपास रिंगरोड़, कुड़वा नाके साथ ही गुरुनानक गेट मोदी पेट्रोल पंप से कृषि उत्पन्न बाजार समिति जानेवाला मार्ग पुरी तरह गड्ढ़ामय हो चुका हैं। विशेष यह है कि उपरोक्त मार्गों पर गोंदिया के विधायक विनोद अग्रवाल का भी निवास स्थान व कार्यालय मौजुद हैं।

न.प. क्षेत्र अंतर्गत मार्गों का सुधार जल्द ही

गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत आनेवाले मार्गों के गड्ढों का सुधार कार्य जल्द ही किया जाएगा। इनमें से कुछ मार्ग डांबर के होने से इसकी निविदा निकाली जाएगी।

–करण चव्हान, मुख्याधिकारी न.प. गोंदिया

राईस मिलर्स की हड़ताल प्रशासन नींद में

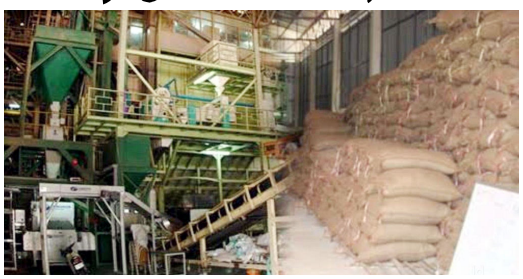

गोंदिया– पूर्वी विदर्भ गोंदिया, भंडारा, नागपुर के करीब ७०० राईस मिलर्स पिछले माह से कस्टम मिलिंग का काम बंद कर हड़ताल कर रहे हैं। लेकिन अब तक शासन व प्रशासन द्वारा इस ओर अनदेखी की जा रही है। विशेष यह है कि शासन द्वारा ४० रुपये प्रति क्विंटल मिलिंग दर से कम कर १० रुपये प्रति क्विंटल कर दी गयी है तथा इस वर्ष आधारभूत सेंटरों में हल्का धान लिया जा रहा, जिससे मिलर्स ने टेस्ट मिलिंग की मांग की है। साथ ही गत ३ से ४ वर्षों से मीलिंग, ट्रांसपोर्टिंग का पैसा नहीं मिला है। उपरोक्त मांगे जब तक शासन द्वारा पूरी नहीं की जाती तब तक राइस मिलर कस्टम मिलिंग नहीं करेंगे।

उल्लेखनीय है कि जिले में अन्य राज्यों से राईस मिलर्स धान खरीद कर चावल का निर्माण कर उपरोक्त चावल विदेश व अन्य प्रांतों में भेजता है। लेकिन जिले में बाहरी राज्यों से आने वाले धान पर भी शासन ने रोक लगाकर जिले के राईस मिल व्यवसाय को खत्म करने का कदम उठाया है। जिससे राईस उद्योग खत्म होने की स्थिति में पहुंच रहा है। जिसके चलते हजारों कामगारों पर भुखमरी का संकट निर्माण हो रहा है। साथ ही ट्रांसपोर्ट तथा राईस व्यवसाय से संबंधित अन्य व्यवसाय में लगे मजदूरों पर भी बेरोजगारी की स्थिति निर्माण हो रही है।

अर्जुनी मोरगांव तहसील में ९८३२ बच्चों को लगाया पोलियों का टीका

संवाददाता अर्जुनी मोरगांव– अर्जुनी मोरगांव तहसील की जनसंख्या १ लाख ५५ हजार ८५१ है। जिसके चलते तहसील में पल्स पोलियों अभियान के तहत १८५ केंद्रों में ० से लेकर ५ वर्ष की आयु वाले ९८३२ बच्चो को पल्स पोलियों का टीका लगया गया। इस अभियान का उद्घाटन बच्चों को दो बुंद पोलियों की खुराक पिलाकर तहसीलदार विनोद मेश्राम ने की। इस अवसर पर तहसील स्वास्थ्य अधिकारी विजय राऊत, खंडविकास अधिकारी राजु वलथरे, डॉ. सुरेंद्र खोबागडे, उपकोषगार अधिकारी पारखी मेडिकल गोबाडे व आशा सेविकाएं प्रमख रुप से उपस्थित थी। उसी प्रकार तहसीलदार विनोद मेश्राम ने कोई भी बच्चा पोलियों की खुराक से वंचित न रह पाए तथा इसके लिए तत्पर रहने का अहवान किया।

दलाल अब्दुल सलीम २०० की रिश्वत लेते धराया

गोंदिया– महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित आर.टी.ओ. चेक पोस्ट देवरी-सिरपुर नाके पर नागपुर निवासी दलाल अब्दुल सलीम अब्दुल हबीब शेख (३७) को २०० रु की रिश्वत लेने का प्रयास करते हुए एंटी करप्शन ब्यूरो द्वारा धर दबोचा गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार शिकायतकर्ता ट्रक चालक नियमित रुप से अकोला से रायपुर चावल भरकर जाता था। जिसे आर.टी.ओ. चेक पोस्ट सिरपुर देवरी से परिवहन अधिकारी व कर्मचारियों द्वारा गाड़ी पास करने के लिए ३०० से ५०० रु. मांगे जाने की शिकायत नागपुर ए.सी.बी. में दर्ज करवाई थी। जिसके पश्चात २९ जनवरी को देवरी चेक पोस्ट पर आरोपी द्वारा शिकायतकर्ता से ३०० रु रिश्वत की मांग कर २०० रु लेने का प्रयास किया गया। जिसे ए.सी.बी. द्वारा धर दबोचा गया। आरोपी के खिलाफ देवरी पुलिस थाने में भ्रष्टाचार प्रतिबंधक कानून की धारा ७(ए) १९८८ सुधारित अधिनियम २०१८ के तहत मामला दर्ज किया गया। उपरोक्त कार्रवाई पुलिस अधीक्षक ए.सी.बी. रश्मि नांदेड़कर, अपर पुलिस अधीक्षक राजेश दुदलवार के मार्गदर्शन में उप अधीक्षक रमाकांत कोकाटे, पुलिस निरीक्षक शशिकांत पाटिल, पुलिस हवलदार दिनेश शिवले, पुलिस सिपाही सारंग बालपांडे, मंगेश कलंबे नागपुर द्वारा की गई।

युवती के साथ छेड़छाड़ प्रकरण में

११ हजार का जुर्माना व २ वर्ष की सजा

देवरी न्यायालय का फैसला

संवाददाता चिचगढ़– ग्राम मोहगांव में २०१५ में युवती के साथ छेड़छाड व असभ्य मामले को लेकर देवरी न्यायालय ने फैसला सुनाते हुए आरोपी के खिलाफ ११ हजार रुपए जुर्माना तथा २ वर्ष की सजा का फैसला देवरी न्यायालय की ओर से २१ जनवरी को सुनाया गया।

जानकारी के अनुसार ग्राम मोहगांव में पीड़ित युवती ११ मई २०१५ को घर में अकेली मौजुद थी। इसी दौरान आरोपी कमलेश जीवन वालदे (निवसी मोहगांव-खामखुरा) ने युवती के घर का पिछे का दरवाजा तोड़ भीतर प्रवेश किया। जिस पर पीड़ित युवती दुसरे के घर भागने में सफल हो गई थी। लेकिन इसके बावजूद भी आरोपी द्वारा युवती को घर आते समय बीच सड़क में रोक छेड़छाड़ की गई थी। शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ चिचगढ़ पुलिस थाने में धारा ४५१, ४५२, ३५१, ३५२, ५०९, के तहत मामला दर्ज किया गया था। इस मामले को लेकर देवरी न्यायालय ने फैसला सुनाते हुए आरोपी के खिलाफ ११ हजार रुपए का जुर्माना तथा २ वर्ष की सजा सुनाई।

बकरी चोरी के अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश

दो अलग-अलग मामलों में १२ लाख ५० हजार का बकरियों सहित वाहन जप्त

गोंदिया– जिले में गत कुछ समय से बकरी चोरी की घटनाओं में काफी बढ़ोतरी हो गई थी। इस मामले में पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे के मार्गदर्शन में अंतरराज्यीय बकरी चोर गिरोह का पर्दाफास कर दो अलग-अलग मामलों में आठ आरोपियों पर मामला दर्ज कर १२ लाख ५० हजार रुपए की बकरियों सहित वाहन जप्त किया गया। पत्र परिषद में पुलिस अधीक्षक द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार अर्जुनी मोरगांव पुलिस थाना अंतर्गत नीमगांव-खाबी निवासी मनोहर गोविंदा ठाकरे व देवेंद्रप्रताप रुखमोड़े के घर से अज्ञात आरोपियों द्वारा जमनापारी प्रजाति की ७ बकरियां जिसकी अंदाजन कीमत १ लाख ६० हजार रुपये की अज्ञात आरोपियों द्वारा चुरा लिया गया। विशेष यह है की गत २ महीने में जिले के विभिन्न पुलिस थाना अंतर्गत बकरी चोरी के मामले बड़े पैमाने पर दर्ज हुए थे। जिसे गंभीरता से लेकर उपरोक्त मामले की जांच लोकल क्राइम ब्रांच को सौंपी गई, जिसके द्वारा जांच किए जाने पर अंतरराज्यीय बकरी चोर गिरोह द्वारा चोरी किए जाने का मामला सामने आया। जिसमें छत्तीसगढ़ के भिलाई खुर्सीपार जिला दुर्ग निवासी साहिल शहादत हुसैन (२)१, मिथुनकुमार श्रीरामचरण सिंह (२६), सोनू उर्फ राकेश ध्यानसिंह सरदार, मुख्य आरोपी गोलू उर्फ आमिर मुबारक हुसैन (३५), सलमान कुरेशी द्वारा बकरी चोरी का गुनाह कबूल करने के साथ ही बताया कि इसके अलावा अन्य आठ चोरियां भी की है। जिसमें नवेगांव बांध १, आमगांव १, देवरी २, सालेकसा १, डुग्गीपार १, अर्जुनी मोरगांव २, मामलों का समावेश है। उपरोक्त आरोपियों के पास से चुराई गई ४० बकरियां जिसकी अंदाजन कीमत २ लाख ९० हजार तथा चोरी के लिए इस्तेमाल किए गए दो चौपाइयां वाहन जिसकी अंदाजन कीमत ७ लाख इस प्रकार ९ लाख ९० हजार का बकरियों सहित माल बरामद किया गया।

वही दूसरा मामला रावणवाड़ी पुलिस थाना अंतर्गत बनाथर निवासी मिलिंद भारत नागदेवे के गोटफार्म से १४ सितंबर को ३० बकरियों की चोरी की गई थी। जिसकी अंदाजन कीमत १ लाख २० हजार रु. थी। जिसकी शिकायत रावणवाड़ी पुलिस थाने में दर्ज थी। इस मामले में भी आरोपियों को तलाश कर मामले का खुलासा किया गया। जिसमें गोंदिया के छोटा गोंदिया निवासी अमोल उमराव कोल्हाटकर, स्वामी लीलाधर बाहे, दुर्गेश उर्फ बालू लीलाधर दाते को हिरासत में लेकर पूछताछ किए जाने पर आरोपियों द्वारा बकरी चोरी किए जाने का गुनाह कबूल किया तथा चोरी किए गए बकरियों को बेच दिया जिसकी बिक्री राशि में से १० हजार नगद तथा चोरी के लिए इस्तेमाल किए गए चौपहियां वाहन जप्त किया गया। इस प्रकार २ लाख ६० हजारा माल आरोपियों के पास से जप्त किया गया।

उपरोक्त कार्रवाई पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे, अपर पुलिस अधीक्षक अतुल कुलकर्णी, उपविभागीय पोलीस अधिकारी जालिंदर नालकुल, उपविभागीय पोलीस अधिकारी जगदीश पांडे के मार्गदर्शन में लोकल क्राइम ब्रांच के निरीक्षक बबन आव्हाड़, उपनिरीक्षक अभयसिंह शिंदे, तेजेंद्र मेश्राम, सहायक फौजदार गोपाल कापगते, ललिंद्र बैस, अर्जुन कावड़े पो. ना. तुलसीदास लुटे, रेखलाल गौतम, अजय राहांगडाले, इंद्रजीत बिसेन, दीक्षित दमाहे, धनंजय सेंडे, तथा रावणवाड़ी के पुलिस निरीक्षक उमेश पाटील उप निरीक्षक महेश कोरे पो. ना. चौहान, रुखमोड़े, बिसेन ने की।

सायली भोयर प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर न्याय देने की मांग

भारतीय बौद्ध महासभा ने सौंपा ज्ञापन

संवाददाता खातिया– भारतीय बौद्ध महासभा गोंदिया जिला तहसील व सर्कल शाखा कामठा के सभी पदाधिकारियों की ओर से सायली धुर्वास भोयर प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर लिप्त आरोपियों पर कठोर कार्यवाई कर पीड़ित भोयर परिवार को न्याय दे, ऐसा निवेदन गोंदिया कार्यालय उपविभागीय अधिकारी ए. एल. खड़तकर को दिया गया।

इस अवसर पर भारतीय बौद्ध महासभा जिला अध्यक्ष देवाराम मेश्राम, तहसील अध्यक्ष एन.एल. मेश्राम, जिला कोषाध्यक्ष राजेश मेश्राम, जिला संगठक प्रकाश डोंगरे, तहसील उपाध्यक्ष मनोहर भावे, नरेंद्र बोरकर, कोषाध्यक्ष प्रफुल्ल लांजेवार, तहसील महासचिव कोमलकुमार नंदागवली, कमठा सर्कल अध्यक्ष योगीराज वंजारी, महासचिव विजेन्द्र मेश्राम आदि पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष व सभी पदाधिकारियों ने कहां कि किसी भी समाज, जाती या धर्म की लड़की हो ऐसे प्रकरण में निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। जिससे कि पीड़ित को न्याय मिल सके आज इस सायली भोयर प्रकरण में पीड़ित परिवार को न्याय के लिए प्रशासन के सामने इधर-उधर घूम घूम कर दरवाजे खटखटायें जा रहे हैं। ऐसे में न्याय व्यवस्था पर बड़ा सवाल निर्माण हो रहा है।

संपादकिय

कल की चुनौतियां

वर्ष २०२०-२१ का आर्थिक सर्वे बता रहा है कि कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न हालात ने देश की अर्थव्यवस्था को रसातल में पहुंचा दिया और आने वाले वर्षों में भी इसका असर झेलने को हमें तैयार रहना होगा। आर्थिक समीक्षा के मुताबिक इस साल अर्थव्यवस्था में ७.७ फीसद का संकुचन रहेगा, लेकिन साथ ही अगले वित्त वर्ष में इसमें तेजी से सुधार की उम्मीद जताते हुए विकास दर ग्यारह फीसद रहने की बात भी कही गई है।

इस साल कृषि को छोड़ अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों में जैसी गिरावट देखने को मिली है, उसे देखते हुए अगर भारत अगले वित्त वर्ष में दस फीसद से ज्यादा की वृद्धि दर हासिल करने में कामयाब रहता है तो यह कम बड़ी उपलब्धि नहीं होगी। सर्वे के अनुसार अर्थव्यवस्था को कोरोना काल से पूर्व की स्थिति में लाने के लिए कम से कम दो साल तो लगेंगे ही। पर जिस तरह के हालात हैं, उनमें अर्थव्यवस्था को सामान्य होने में दो साल से ज्यादा भी लग जाएं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

आर्थिक सर्वे में कृषि क्षेत्र की विकास दर ३.४ फीसद रहने का अनुमान है। लेकिन उद्योग और सेवा क्षेत्र की जो तस्वीर देखने को मिल रही है, वह निराशाजनक है। सर्वे के मुताबिक चालू वित्त वर्ष में औद्योगिक क्षेत्र में ९.६ फीसद और सेवा क्षेत्र में साढ़े आठ फीसद से ज्यादा की गिरावट रहने का अनुमान है। चिंता की बात ज्यादा इसलिए भी है कि जीडीपी में इन दोनों क्षेत्रों का बड़ा योगदान रहता है। मांग, खपत और उत्पादन का चक्र काफी कुछ इन्हीं दोनों क्षेत्रों पर निर्भर रहता है।

यही क्षेत्र हैं जो सबसे ज्यादा रोजगार देते हैं। आज स्थिति यह है कि पूर्णबंदी में जो उद्योग-धंधे बंद हुए, उनमें से बड़ी संख्या में अभी तक चालू नहीं हो पाए हैं। जिन करोड़ों लोगों का काम-धंधा बंद हुआ, उनमें भी बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जिनके पास अभी भी रोजगार नहीं है। सरकार के अब तक के राहत पैकेजों का भी सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिला है। जाहिर है, यह चुनौती आने वाले साल में भी बनी रहेगी और इससे निजात पाने में लंबा समय लग सकता है।

कोरोना संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए पूर्णबंदी जैसा कदम अपरिहार्य था। सरकार का जोर अर्थव्यवस्था से भी ज्यादा महामारी से निपटने की रणनीति पर रहा। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोरोना के खिलाफ जंग में दूसरे देशों की तुलना में भारत के प्रयास कहीं ज्यादा सफल रहे हैं। भारत में दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चल रहा है। लेकिन अब जोर आर्थिक मोर्चे पर ठोस नतीजे देने वाली नीतियों के निर्माण पर होना चाहिए। विनिर्माण व सेवा क्षेत्र और बुनियादी क्षेत्र की परियोजनाओं को ज्यादा जोर देने की जरुरत है। हालांकि सरकार ने साफ कर दिया है कि कर्ज भुगतान में मोहलत जैसी कुछ रियायतें लंबे समय तक नहीं रहेंगी, क्योंकि बैंकिंग क्षेत्र पर इसका बुरा असर पड़ रहा है। ऐसे में उद्योगों खासतौर से छोटे और मझौले उद्योगों के लिए उदार नीतियां अपनानी होंगी।

सर्वे में स्वास्थ्य क्षेत्र पर खर्च को ढाई से तीन फीसद तक ले जाने की बात भी है। देश में स्वास्थ्य क्षेत्र को सुधारने के लिए क्या कुछ होना चाहिए, यह हम पिछले दस महीनों में अनुभव कर ही चुके हैं। देश के समक्ष इस वक्त बड़ी चुनौती मौजूदा संकट से बाहर निकलने की तो है ही, साथ ही अगले पांच में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का सपना भी है। इसलिए अब ऐसी आर्थिक नीतियों के निर्माण और उन पर ईमानदारी से अमल की जरुरत है जो संकट से उबारने के साथ ही तेज वृद्धि का रास्ता भी दिखा सकें।

उमेद अभियान के माध्यम से कर्मियों की होगी पुनर्नियुक्त

कर्मचारियों के संघर्ष को मिली सफलता

गोंदिया– ग्राम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले उमेद अभियान में कार्यरत जिले सहित संपूर्ण राज्य के लगभग २९०० कर्मचारियों को सेवामुक्त कर सीएससी के माध्यम से नियुक्ति देने का फैसला सरकार ने दिया था। इसे अन्यायकारी बताते हुए कर्मचारियों ने संघर्ष जारी रखा। अनेक बाद माह आखिरकार उनके संघर्ष के सामने सरकार को झुकना पड़ा। अब सीएससी के माध्यम से ही पुनर्नियुक्त देने का फैसला सरकार ने लिया है। इस निर्णय से जिले के ९० कर्मचारियों सहित राज्य के २९०० कर्मचारियों में हर्ष व्याप्त है। कर्मचारी संगठन के अमोल भागवत ने जानकारी देते हुए बताया कि सीएससी के माध्यम से नियुक्ति देने शासन निर्णय रद्द करने की मांग को लेकर उमेद संविदा कर्मचारी संगठन एवं महिला संविदा कर्मचारी कल्याणकारी मंडल के माध्यम से आंदोलन किया गया। लगभग सभी जिलों में यह आंदोलन होने के पश्चात मुंबई के आजाद मैदान पर भी लाखों महिलाओं की उपस्थिति में कर्मचारियों ने आंदोलन किया। उनकी मांग को पूर्ण करने को लेकर पूर्व न्यायमूर्ति बी.जी. कोडसे पाटील, विधान परिषद उपसभापति नीलम गोरे, विधायक हरिभाऊ राठोड़, अर्चना सहित संगठन के पदाधिकारी व जनप्रतिनिधियों ने सहयोग किया। कर्मचारियों के संघर्ष के कारण ही सरकार को मांगे माननी पड़ी है। इस संघर्ष में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले सभी का आभार माना गया। नियुक्ति के साथ-साथ उमेद अभियान में कार्यरत समूह संसाधन व्यक्ति महिलाओं की मानधन बढ़ात्तरी करने की मांग भी की गई थी। जो कि फिलहाल मंजूर नहीं हुई है। गौरतलब है कि उमेद अभियान के तहत जिले के हर गांव में महिला बचत समूह स्थापित किए गए है। जिनके माध्यम से ग्राम विकास के साथ-साथ महिलाओं को रोजगार एवं स्वयं के उन्नती के अवसर प्रदान हुए है। इस कारण उमेद कर्मचारियों की मांगे पुरी करने के लिए कर्मचारियों के साथ-साथ लाखो महिलाएं भी आंदोलन में शामिल हुई।

Umed
Maharashtra State Rural Livelihoods Mission
महाराष्ट्र राज्य ग्रामीण जीवनोन्नती अभियान

व्यक्ति को हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए -वंजारी

बिरसी में अशोक स्तंभ अनावरण समारोह कार्यक्रम

संवाददाता खातिया– व्यक्ति को हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए व हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि मुकाम उन्हीं को हासिल होता है जो कोशिश करते हैं। उक्त आशय कार्यक्रम के उद्घाटक आयकर आयुक्त धनंजय वंजारी ने तहसील अंतर्गत आनेवाले ग्राम बिरसी में भारतीय बौद्ध महासभा ग्राम शाखा बिरसी सर्कल कामठा के माध्यम से अशोक स्तंभ अनावरण कार्यक्रम के आयोजन के दौराने व्यक्त किया। कार्यक्रम की शुरुआत में सर्वप्रथम तथागत भगवान गौतम बुद्ध व बोधिसत्व परम पूज्य डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, छत्रपति शिवाजी महाराज, सम्राट अशोक, की प्रतिमा में माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया व त्रिशरण पंचशील ग्रहण कर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष के रुप में भारतीय बौद्ध जिला महासभा जिला शाखा अध्यक्ष देवाराम मेश्राम, प्रमुख मार्गदर्शक के रुप में ओबीसी सेवा संघ के राज्य संगठन सावन कटरे, डॉ. गुरुदास येडेवार, सामाजिक कार्यकर्ता विनोद हूमने, तहसील भारतीय बौद्ध महासभा के अध्यक्ष एन.एल. मेश्राम, ग्राम सरपंच इंदुताई राकेश वंजारी, महासचिव कोमलकुमार नंदागवली, उपाध्यक्ष मनोहर भावे, सुनील गजभिए, आदि पदाधिकारि व ग्राम के प्रतिष्ठित नागरिक एवं समस्त बौद्ध बांधव उपस्थित थे कार्यक्रम के दौरान उपस्थित मार्गदर्शको ने सम्राट अशोक व संविधान पर मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर आयकर आयुक्त धनंजय वंजारी का संविधान उद्देशिका का तैल चित्र सौंपकर सत्कार किया गया। साथ ही उपस्थित मार्गदर्शको को संविधान पुस्तिका देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए भारतीय बौद्ध महासभा ग्राम शाखा के दीपक वंजारी, हितेश वंजारी, प्रमोद वंजारी, मुन्ना मेश्राम, तिलकचंद बंसोड, नारायण वंजारी, बेनीप्रसाद बोम्बार्डे, आनंद वंजारी, भाऊदास बंसोड, ओंमकार वंजारी, बसंत मेश्राम, राजेश गजभिए आदि ने अथक प्रयास किया। कार्यक्रम का संचालन सर्कल अध्यक्ष योगीराज वंजारी ने किया व आभार ईंदु वंजारी ने माना।

कोरोना योद्धा रमेश लांजेवार का सत्कार

गोंदिया– कोरोना महामारी के संक्रमण के दौरान शासन, नगर पंचायत, प्रशासन, पुलिस विभाग, स्वयंसेवी संस्था के सदस्य व पत्रकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुई। कोरोना महामारि के दौरान खुद के जीवन की परवाह न करते हुए कोरोना योद्धा बनकर डंटे रहे। जिसके चलते नगर पंचायत कार्यालय में कोरोना योद्धाओं का सत्कार किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष के रुप में विधायक मनोहर चंद्रिकापुरे उपस्थित थे। उसी प्रकार प्रमुख अतिथि के रुप में स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. हर्षवर्धन मेश्राम, पुलिस निरीक्षक सचिन बागडे, नायब तहसीलदार रमेश खोकले, नगर पंचायत के मुख्याधिकारी डॉ. विवेक मेश्राम, प्रशासकीय अधिकारी निहाल नायकवडी, कनिष्ठ अभियंता राजीव जाधव की प्रमुख उपस्थिती में कोराना योद्धाओं को सम्मान पत्र व भेंटवस्तु देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सड़क अर्जुनी तहसील में कोरोना संक्रमण के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नगर पंचायत के कर्मचारी, शिक्षक समाजसेवक, स्वसेवी संस्था, पुलिस, पत्रकार तथा अन्य विभाग के अधिकारी कर्मचारियों को कोरोना योद्धा के रुप में विधायक चंद्रिकापुरे के हस्ते सम्मानपत्र देकर सत्कार किया गया। कार्यक्रम का संचालन निहाल नायकवाडी की ओर से किया गया

मुख्य १२ आसन

योगाचार्य नरेन्द्र आर्य

योगाभ्यास के लिए मुख्य १२ आसन :

जीम तथा व्यायमशालाओं में प्रचलित शारीरिक व्यायम से केवल मांसपेशियां विकसित होती है, जब कि आसनों के अभ्यास से शरीर के समस्त जोड़ मांसपेशियां की दक्षता, शक्ती तथा लचिलेपन में वृद्धी होती है। तरीके से श्वास, प्रश्वास को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करने से संपूर्ण शरीर रोगप्रतिरोधक क्षमता एवं रक्त संचार में भी वृद्धी होती है।

शशकासन

विधि– घुटनों को मोड़कर पंजो के बल सीधा बैठें। दोनों पैरों के अंगुठे आपस में मिले होना चाहिए और एंडियों में थोड़ी दुरी ले, शरीर का सारा भार पैरों में रखे और दोनों हांथो को श्वांस भरते हुए उपर उठाये, तथा आगे झुकते हुए श्वांस को बाहर छोड़े एवं हांथो को आगे फैलाकर हथेलियां नीचे की ओर रखते हुए कोहनियाँ तक हांथो को भूमि पर टीका दें। माथा भी भूमि पर टीका ले। कुछ समय इस स्थिति में रहकर पुन: वर्जसन में आ जाए। इस क्रिया अभ्यास को शशकासन कहते है।

विशेष– नीचे झुकते हुए यह ध्यान दे कि नितंब एंडियों से ही लगे रहे। अर्थात नितंबो को न उठायें।

लाभ– आंत, यकृत, अन्याशय एवं गुर्दो को उर्जा प्रदान करता है। स्त्रीयों के गर्भाशय को पुष्ट करके उदर, कमर एवं कुल्हों की चर्बी कम करता हैं। मानसिक तनाव, क्रोध, चिड़चिड़ापन, गुस्सा आदि को दुर करके मानसिक शांति प्रदान करता हैं। दमा व हृदय रोगियों के लिए विशेष लाभप्रद है। फेफडों को मजबूत करने के लिए यह एक उत्तम योगाभ्यास है।

सावधानी– पीठ दर्द से पिड़ित व्यक्तियों को यह आसन नहीं करना चाहिए। वर्टीगो, स्लीप डिस्क, हाई ब्लड प्रेशर, चक्कर, गर्भवति स्त्री, हर्निया वालों को यह आसन नहीं करना चाहिए।

वक्रासन

विधि– दण्डासन में बैठकर दायां और बायां पैर मोड़कर बायीं जंघा के पास घुटनों में सटाकर रखें अथवा घुटनों के ऊपर से दुसरी ओर भी रख सकते हैं। बायां पैर सिधा रहेगा। बायें हांथ को दाएं पैर एवं उदर (पेट) के बीच से लाकर दाएं पैर के पंजे के पास टीका दें। दाएं हांथ को कमर के पीछे भूमि पर सीधा रखकर गर्दन को घुमाकर दायीं और कंधे के ऊपर से मोड़कर पीछे देखें। इसी प्रकार दुसरी ओर से भी ऐसा ही अभ्यास करना वक्रासन कहलाता है।

लाभ– कमर व कुल्हों की चर्बी को कम करता है। हर्नियां, दमा (अस्थमा), मधुमेह, एसीडीटी, वायु संबंधित रोग, कमर दर्द के लिए अत्यंत उपयोगी आसन है। उच्च रक्तचाप को भी कम करने में लाभदायक हैं।

सावधानी– अल्सर से ग्रसित लोगो को यह आसन नहीं करना चाहिए। गर्दन में दर्द या हृदय रोग से पिड़ित व्यक्ति को यह आसन नहीं करना चाहिए। मासिक धर्म काल में, और गर्भवति महिला इसे न करें।

आवश्यकता है

साप्ताहिक बुलंद गोंदिया के लिये गोंदिया-भंडारा जिले की सभी तहसीलों के लिये संवाददाता, प्रतिनिधी तथा वितरक नियुक्त कराना है । इच्छुक व्यक्ति कार्यालय में आकर संपर्क करें अथवा 7670079009, 9405244668, 9763355727 पर संपर्क करें ।

– सम्पादक

१३ शाला बाह्य बच्चें शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल

गोंदिया– शिक्षा के अधिकार से कोई भी बालक वंचित न रहे इस हेतु समग्र शिक्षा अभियान सरकार द्वारा क्रियान्वित किया गया है। जिसके माध्यम से अब तक अनेक शाला बाह्य बच्चों को शिक्षा के प्रवाह से जोड़ा गया। छत्तीसढ़ राज्य के बिलासपुर, महाराष्ट्र के नागपुर, वर्धा जिले से रोजगार की तलाश में गोंदिया पहुंचे स्थलांतरित परिवारों के १३ बालकों को स्कूलों में दाखिला देकर शिक्षा का अधिकार दिया गया। जिप के पीछे स्थलांतरित परिवार आए हुए है। वहां शाला बाह्य बालकों की खोज करने के लिए समग्र शिक्षा विभाग की समन्वयक (बालरक्षक) कुलदीपिका बोरकर निरीक्षण करने पहुंची। इस दौरान उन्हे १३ शला बाहृय बालक दिखाई दिए। जिसके पश्चात उन्हें करीबी स्कूल फुलचुर में दाखिला देने की प्रक्रिया मुख्याध्यापिका के.एम. मुलतानी सहायक शिक्षक आनंद जांभुलकर के सहयोग से शुरु की गई तथा इन बालकों को स्कूल के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए दिव्या फाउंडेशन के महाराष्ट्र समन्वयक चंद्रकुमार बहेकार, स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विजय वानखेड़े, बालरक्षक संतोष खेरडे लोकेश चुटे आदि उपस्थित थे। स्थलांतरित परिवार के सभी महिला, पुरुषों व शाला बाह्य बालकों को एकत्रित कर उन्हें शिक्षा का महत्व समझाया गया। नोटबुक, पेंसिल, रबर, कंपास बॉक्स तथा अन्य शैक्षणिक सामग्री देकर सोमवार से स्कूल जाने हेतु बच्चों को प्रेरित किया गया। उसी प्रकार अन्य छोटे बालकों को भी शिक्षा का महत्व बताकर मिठाई का वितरण किया गया। समग्र शिक्षा विभाग व दिव्या फांउडेशन की पहल की सराहना की गई। गौरतलब है कि जिला बालरक्षक कुलदीपिका बोरकर के नेतृत्व में अब तक अनेक शाला बाहृय बालकों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ है। शिक्षाधिकारी राजकुमार हिवारे के मार्गदर्शन में शाला बाहृय बालको के लिए विशेष मुहिम चलाई जा रही है। जिन बालकों को शिक्ष का अधिकार दिलाया गया उनमें समीर कडवे, मिलन कडवे, लिलेश्वरी चंद्रावत, भावना चंद्रावत, बलवंत यथानी, बिट्टू माहिंदे, संध्या माहिंदे, आदित्य यदानी, नंदिनी माहिंदे, अन्नकुमारी शिकरी, मनीष शिकरी आदि का समावेश है।

काश, जिंदगी सचमुच...

काश, जिंदगी सचमुच कोई किताब हो पाती,
पढ़ सकती, कि आगे क्या होगा,
क्या पाऊंगी और क्या दिल खोएगा,
कब थोड़ी खुशी मिलेगी कब दिल रोएगा,
काश, जिंदगी सचमुच कोई किताब हो पाती,
पढ़ सकती मैं उन लम्हों को जिन्होंने मुझे रुलाया था,
जोड़ती कुछ पन्ने, जिनकी यादों ने मुझे हंसाया था,
हिसाब तो लगा पाती, कितना खोया है और कितना पाया है,
काश, जिंदगी सचमुच कोई किताब होती,
वक्त से आंखें चुरा कर पीछे चली जाती,
टूटे अरमानों को फिर से सजाती,
कुछ पल के लिए मैं भी मुस्कुराती,
काश, जिंदगी सचमुच कोई किताब हो पाती...!

– रिया गाजीपुरे

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह इस राशि के जातकों को शारीरिक तथा मानसिक परेशानी बनी रह सकती है. जीवनसाथी का सहयोग आपके लिए मददगार रहेगा. व्यापार से संबंधित कोई लाभकारी योजना आपको मिल सकती है. दैनिक बोलचाल में अपनी वाणी पर संयम रखना उचित रहेगा. धन से जुड़ी चिंताएं कम हो सकती हैं.

वृषभ : इस सप्ताह तुला राशि के जातकों के मान-सम्मान में वृद्धि हो सकती है. इस हफ्ते कामकाज को लेकर आप अधिक प्रयत्नशील बने रहेंगे तथा लाभ भी प्राप्त करेंगे. सेहत के लिहाज से देखा जाए तो ब्लड प्रेशर व शुगर के मरीज कुछ परेशान हो सकते हैं. यात्रा की अधिकता बनी रह सकती है. प्रेम-संबंध के लिहाज से यह हफ्ता मिश्रित परिणाम देने वाला रहेगा.

मिथुन : इस सप्ताह धन संबंधी मसलों को लेकर आप जो प्रयास करेंगे, उसमें सफलता मिल सकती है. इस हफ्ते आप किसी यात्रा की योजना बना सकते हैं. जीवनसाथी के साथ तालमेल अच्छा बना रहेगा. कार्य क्षेत्र से संबंधित शुभ समाचार मिलेंगे तथा धन लाभ को लेकर स्थितियां अच्छी बनी रहेगी. किसी भी प्रकार के नकारत्मक विचारों को अपने पर हावी न होने दें.

कर्क : कार्यक्षेत्र में स्थिति आपके लिए अच्छी बनी रहेगी. किसी से व्यर्थ विवाद में ना उलझें. आपके आसपास कई तरह के नवीन बदलाव होंगे. परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदलें. परिवार का ध्यान रखें. दांपत्य सुख बना रहेगा.

सिंह : इस सप्ताह आपको भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलेगा. भाग्य के सहयोग के चलते किसी कार्य में सफलता की प्राप्ति हो सकती है. संतान से सुख मिलेगा. धन संबंधी कोई लाभ आपको मिल सकता है. सेहत को लेकर कुछ समस्या हो सकती है. कार्यक्षेत्र में लाभ मिलेगा. जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा.

कन्या : इस सप्ताह शुरुआती दिनों में कुछ शारीरिक तकलीफ हो सकती है. इस हफ्ते की गई यात्रा आपको लाभ प्रदान करेगी. लेखन या साहित्य के कार्यो से भी लाभ प्राप्त हो सकते हैं. किसी प्रकार के अटके कार्य इस हफ्ते पूर्ण हो सकते हैं. घर में किसी तरह के नए सामान की आप खरीदारी कर सकते हैं. वैवाहिक जीवन सामान्य बना रहेगा.

तुला : इस सप्ताह आपको कार्यक्षेत्र में कार्यो को लेकर अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे. कार्यो को लेकर अगर कोई समस्या बनी हुई थी तो वह समाप्त होगी. इस हफ्ते आपको आय के नए मार्ग मिल सकते हैं. किया गया पुराना कोई निवेश आपको लाभ दे सकता है. हफ्ते के अंतिम भाग में सेहत का ध्यान रखें. व्यर्थ का व्यय संभव है.

वृश्चिक : इस सप्ताह आपकी आय में अचानक वृद्धि के योग बन सकते हैं. कार्यक्षेत्र में लोगों पर आपका प्रभाव बना रहेगा. अधिकारी वर्ग के लोग आपके कार्य से प्रसन्न रहेंगे. वाणी व्यवहार पर संयम रखना आपको लाभ दिला सकता है. पारिवारिक माहौल अच्छा बना रहेगा. हफ्ते के अंतिम भाग में सेहत संबंधी कोई तकलीफ हो सकती है.

धनु : इस सप्ताह आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और आप अपने सारे कार्य आसानी से पूर्ण कर पाएंगे. इस हफ्ते आपके कार्यक्षेत्र तथा परिवार में प्रसन्नता भरा वातावरण बना रहेगा. धन लाभ के लिए यह हफ्ता उत्तम फल देने वाला बना रहेगा. आप वैवाहिक सुख का आनंद उठाएंगे. भाइयों व मित्रों की मदद आपको सफलता दिला सकती है. छात्रों को शुभ समाचार मिलेगा।

मकर : इस सप्ताह की शुरुआत दौड़भाग के साथ हो सकती है. कामकाज को लेकर आप इस हफ्ते अधिक मेहनत करते नजर आएंगे. उच्च अधिकारियों से आपके संबंध अच्छे व मधुर बने रहेंगे. व्यापारी वर्ग को इस हफ्ते कोई लाभ मिल सकता है. जीवनसाथी से लाभ मिलेगा. आपका कहीं फंसा हुआ पैसा आपको मिल सकता है. वाणी पर संयम रखें.

कुंभ : इस सप्ताह आप अपने पराक्रम के द्वारा सभी मुशिकलों पर विजय प्राप्त करेंगे. किसी प्रकार का स्थान परिवर्तन हो सकता है. सरकारी कामकाज में भी सफलता के योग बने रहेंगे. किए गए निवेशों से आपको फायदा हो सकता है. जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है. सेहत का ध्यान रखें, सिरदर्द की समस्या हो सकती है.

मीन : इस सप्ताह इस राशि के जातकों को शुरुआत में सेहत से जुड़ी कोई समस्या परेशान कर सकती है. भाइयों से लाभ की प्राप्ति हो सकती है. यात्रा के योग बने रहेंगे. परिजनों के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा भी कर सकते हैं. सहकर्मियों से कार्यो में सहयोग मिलेगा. इस हफ्ते आपको अपनी वाणी पर काफी ध्यान रखना होगा.

महिला पार्षद के पति ने महिला अभियंता के साथ की बदसलूकी

कर्मचारियों का विरोध, कलम बंद आंदोलन

गोंदिया नगर परिषद बांधकाम विभाग की महिला नगर अभियंता डॉली मदान के साथ महिला पार्षद रत्नमाला साहू के पति कृषिकांत साहू द्वारा १ फरवरी की दोपहर १.३० बजे के दौरान उनके कक्ष में पहुंच कर नियम बाहय काम करने का दबाव बनाना बनाया गया। जिस पर अभियंता द्वारा मना किए जाने पर अभद्र व्यवहार कर देख लेने की धमकी दी तथा कार्यालय की कुर्सी को फेंक दिया।

इस घटना की जानकारी महिला अभियंता द्वारा न. प. मुख्याधिकारी करण चौहान को देकर महिला पार्षद के पति के खिलाफ शहर पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करवाई। इस मामले में नगर परिषद के सभी विभाग प्रमुखों की आपसी सहमति के पश्चात भविष्य में इस प्रकार की घटना ना हो इसके खिलाफ २ फरवरी को सभी कर्मचारियों द्वारा कलम बंद आंदोलन कर इसका विरोध किया। कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार पर एक सभा का आयोजन कर कर्मचारियों द्वारा महिला नगर अभियंता के साथ महिला पार्षद के पति द्वारा किए गए अभद्र व्यवहार का निषेध किया।

चिचगढ़ महिला कांग्रेस की ओर से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

संवाददाता देवरी– महिला कांग्रेस की सीमा कोरोटे व देवरी तहसील महिला कांग्रेस के संयुक्त रुप में मकर संक्रांति के अवसर पर हलदी कुंकु व महिला मिलन समारोह का आयोजन चिचगढ़ के वीर बिरसा मुंडा के स्मारक के समीप किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संयोजिका सीमा कोरोटे ने किया तथा जिप की पूर्व अध्यक्ष उषाताई मेंढे कार्यक्रम की अध्यक्ष के रुप में उपस्थित थी। उसी प्रकार कांग्रेस जिलाध्यक्ष उषा शहारे ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुवात की। इस अवसर पर महिलाओं का मार्गदर्शन किया गया तथा इसके पश्चात हलदी कुंकु लगाकर वान का वितरण किया और महिलाओं के लिए संगीत कुर्सी के साथ ही विभिन्न स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। आयोजित स्पर्धा में जीत हासिल करनेवाली महिलाओं को प्रमुख अतिथियों के हस्ते पुरस्कार का वितरण कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर देवरी तहसील कांग्रेस अध्यक्ष संदीप भाटिया, पूर्व जिप सदस्य नाथुरी कुंभरे, आमगांव तहसील महिला कांग्रेस अध्यक्ष छबु ऊके, चिचगढ़ की सरपंच कल्पना गोस्वाम, पूर्व सरपंच अर्चना नरवरे, किरण राऊत, पूजा कटकवार, पिपरखारी की सरपंच धनश्रीबाई गंगासागर तथा सामाजिक कार्यकर्ता निशा परिहार सहित अनेक महिलाएं उपस्थित थी।

मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी अभियान निबंध स्पर्धा में

लीलाधर बहेकार जिले में प्रथम

गोंदिया – कोरोना संक्रमण काल के दौरान जन जागृति के लिए शासन द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। जिसमें १५ सितंबर से २५ अक्टूबर तक शालेय विद्यार्थियों के लिए विभिन्न स्पर्धा आयोजित की गई थी। जिसमें मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी अभियान इस विषय पर निबंध स्पर्धा में गोरेगांव तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम निंबा की जिला परिषद प्राथमिक शाला के कक्षा सातवीं का विद्यार्थी लीलाधर राजेंद्र बहेकार ने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिसका पालक मंत्री के हस्ते सत्कार किया गया।

उपरोक्त कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी दीपक कुमार मीणा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी प्रदीप डांगे, शिक्षणाधिकारी राजकुमार हिवारे, जिला स्वास्थ्य अधिकारी तथा प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। विद्यार्थी की इस सफलता पर शाला के मुख्य अध्यापक आर. एच. नंदेश्वर, मार्गदर्शक राजेंद्र बंसोड़, शाला व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष माधव शिवणकर, पालक संघ के अध्यक्ष तेजेश्वरी ठाकरे तथा गांववासियों ने अभिनंदन किया है।

नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्यकर्ता रहें कटिबद्ध - राकांपा प्रदेशाध्यक्ष

अर्जुनी मोरेगांव निर्वाचन क्षेत्र में मंत्री जयंत पाटील ने कार्यकर्ताओं से साधा संवाद

गोंदिया – पक्ष के कार्यकर्ताओं को सिर्फ चुनाव के दौरान ही नागरिकों से संपर्क नहीं साधना चाहिये, बल्कि हर समय लोगों की समस्याओं को जानने व उसके समाधान के लिए कटिबद्ध होकर कार्य करना चाहिए ताकि कार्यकर्ता लोगों के दिमाग में अपनी छवि बना लें। इसी कार्यशैली के कारण आज राकांपा जमीनी स्तर तक पहुंच गई है। कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर पर जाकर लोगों की समस्याओं का समाधान करना चाहिए। उक्त आशय के उदगार एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष और राज्य में जलसंपदा मंत्री जयंत पाटिल ने एनसीपी के परिवार संवाद यात्रा के तहत ३१ जनवरी को अर्जुनी मोरेगांव निर्वाचन क्षेत्र में उपस्थित कार्यकर्ताओं से कीया।

प्रदेशाध्यक्ष पाटील ने आगे कहा, जब लोगों की समस्याओं के संदर्भ में अगर आंदोलन करने का समय आये, तो बिना

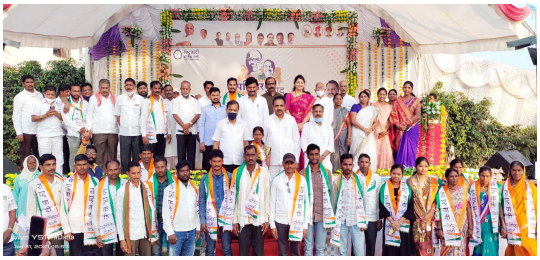

किसी हिचकिचाहट के उनके हक के लिए आगे आना चाहिए। आप सत्ता में हो या ना हो, लोगों के काम के लिए हमेशा अपनी भूमिका सक्रिय रखना चाहिए। गोंदिया जिले में कई समस्याएं हैं। कार्यकर्ताओं को उन समस्याओं को हल करने के लिए काम करना चाहिए।

उन्होंने कहा, इस जिले को सांसद प्रफुल पटेल जैसा मजबूत नेतृत्व मिला है। इसी तरह, पूर्व विधायक राजेंद्र जैन भी इस जिले की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार प्रयासरत हैं। उन्होंने गोंदिया जिले में कई सिंचाई परियोजनाओं की जानकारी दी है। हम लंबित परियोजनाओं को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए कदम उठाएंगे। इसी तरह, कुछ परियोजनाओं को मंजूरी दी जाएगी। आज सिंचाई विभाग की समीक्षा बैठक हुई। इस बैठक में, हम जिले की सभी परियोजनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे और उनके लिए मार्ग प्रशस्त करेंगे।

मैं इस बात से आश्वस्त हूं कि जमीनी स्तर पर पक्ष का कार्यकर्ता पार्टी संगठन को मजबूत करने में पीछे नहीं है। इस जिले में चुनाव हैं, लेकिन राज्य में कोई चुनाव कार्यक्रम नहीं है। फिर भी, मैंने अपने पक्ष के परिवार से सवांद साधने का संकल्प लेकर इस यात्रा की शुरुवात की है, ताकी कार्यकर्ताओं से भेंट कर उनकी हौसला अफजाई कर सकुं। इस अवसर पर प्रदेशाध्यक्ष जयंत पाटिल, राष्ट्रवादी महिला कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष रुपालीताई चाकनकर, राष्ट्रवादी युवक कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष मेहबुब शेख, राष्ट्रवादी युवती कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सक्षणा सलगर, विद्यार्थी संघटना प्रदेशाध्यक्ष सुनिल गवाणे, मेघा रामगुंडे, रविकांत बर्वे, प्रविण कुंटे पाटील, . मनोहर चंद्रिकापुरे, राजु कारेमोरे, .मधुकररावं कुकडे, राजेंद्र जैन, खुशाल बोपचे, पंचम बिसेन, गंगाधर परशुरामकर, किशोर तरोणे, राजलक्ष्मी तुरकर, केतन तुरकर, देवेन्द्रनाथ चौबे, अविनाश काशिवार, लोकपाल गहानें, रमेश चुरडे, देवचंद तरोणे, छाया चौहान, रजनी गिरहेपुंजे, दिनेश कोरे, योगेश नाकाडे, आशीष येरने, निप्पल बरैय्या व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन

खिलाड़ियों में भारी उत्साह

गोंदिया डिस्ट्रीक शतरंज असोसिएशन व स्टेडियम चेस क्लब द्वारा स्व. प्रेमलता जनकराज गुप्ता मेमोरियल रॅपीड शतरंज प्रतियोगिता का प्रारंभ खिलाड़ियों के भारी उत्साह के साथ इंदिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्घाटन उद्योगपति विकास जनकराज गुप्ता, प्रभाकर पालांदुरकर के हाथों शतरंज की एक चाल चलकर किया गया। उसी प्रकार उक्त प्रतियोगिता में कुल ९६ खिलाड़ियों द्वारा भाग लिया गया जिसमें कई राष्ट्रीय व रेटेड खिलाड़ियों का भी समावेश है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुकेश बाराई ने की। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रुप में शिखा पिपलेवार, दिलीप जैन, मिलन लिल्हारे, किशोर उपाध्याय उपस्थित थे जिनके द्वारा खिलाड़ियों का मार्गदर्शन भी किया गया।

हाजरा फॉल पर्यटन स्थल में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

संवाददाता दरेकसा– गणतंत्र दिवस के अवसर पर हाजरा फॉल पर्यटन स्थल में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। उक्त स्वास्थ्य शिविर का आयोजन सालेकसा वनपरिक्षेत्र अधिकारी अभिजीत ईलमकर व संयुक्त वनव्यस्थापन समिति नवाटोला द्वारा संयुक्त रुप से आयोजित किया गया। इस स्वास्थ्य १४२ लोगो ने शिविर का लाभ लिया। गौरतलब है कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर हाजरा फॉल पर्यटन स्थल में बड़े पैमाने पर पर्यटक आते है। जिसके चलते ग्रामीणों के साथ-साथ स्वास्थ्य शिविर का लाभ और अधिक लोगो को मिल सके। इस हेतु प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर शिविर का आयोजन किया जाता है। गोंदिया शहर के कई डॉक्टरों ने शिविर में उपस्थित रहकर अति दुर्गम नक्सल प्रभावित आदिवासी क्षेत्र के नागरिकों के स्वास्थ्य की जांच कर अपनी सेवा प्रदान की। जिसमें डॉ. प्रमेश गायधने हृदय रोग विशेषज्ञ, डॉ. लोकेश चीरवतकर मनोरोगी विशेषज्ञ, डॉ. संजय माहुले पथोलॉजीस्ट, डॉ. स्वेतल माहुले स्त्री रोग विशेषज्ञ, डॉ. राकेश चिखलोंडे बाल रोग विशेषज्ञ, डॉ. दिगंबर मरस्कोल्हे हड्डी रोग विशेषज्ञ, डॉ. नितिका पोयाम नेत्ररोग विशेषज्ञ, डॉ. सनी जायसवाल ब्रेन व स्पाइन सर्जन, डॉ. सचिन केलनका शल्यचिकित्सक, डॉ. शंकर बनोटे दंत रोग विशेषज्ञ, डॉ. हेमंत कुमार गौतम आयुर्वेदाचार्य, डॉ. अजय बेलानी होमिओपॅथिक विशेषज्ञ तथा नेशनल मेडिकल मोबाईल युनिट सालेकसा का समावेश है। इस शिविर में पर्यटकों व वनकर्मचारियों समेत कुल १४२ स्थानिय ग्रामवासियों द्वारा शिविर का लाभ उठाया गया। आयोजित शिविर के कार्यक्रम के दौरान कुलराज सिंग उपवनसंरक्षक गोंदिया, प्रदीप पाटिल सहायक वनसंरक्षक गोंदिया व डॉ राजेंद्र जैन गोंदिया ने मार्गदर्शन किया। अति दुर्गम आदिवासी क्षेत्र में अपनी सेवा प्रदान करनेवाले डॉक्टरों को मानचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उसी प्रकार हिरवल बहुउद्देश्यी संस्था के रुपेश निंबरते व जरोदे ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु अथक प्रयास किया।

बच्चों की चित्रकला स्पर्धा का सफल आयोजन

गोंदिया– राष्ट्रीय राजपुत महिला संगठन व युवा करनी सेना के संयुक्त तत्वाधान में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बच्चों की कला को निखारने हेतु इस प्रतियोगिता का अयोजन किया गया। महाराणा प्रताप के स्मारक रेलटोली गोंदिया में छोटे बच्चों की चित्रकला स्पर्धा का आयोजन राजपूत महिला सेना के समस्त पदाधिकारी व युवा सेना पदाधिकारी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। प्रतियोगिता में बच्चो को पानी बचाव व पर्यावरण की रक्षा के विषय दिय गए। विशेष रुप से आमंत्रित प्रकाश भैरव, वंदना खतवार व अमित सिंह चौहान द्वारा बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग को प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान दिया गया। इस अवसर पर बच्चों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उसी प्रकार अतिथियों को भी गोंदिया जिला करणी सेना व महिला संगठन द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु शीलू राकेश सिंह ठाकुर नगर परिषद पार्षद व महिला जिला अध्यक्ष करनी सेना, पूजा अभिषेक बैस, इशिता सोलंकी, मीना, राजकुमार अंकुर ठाकुर व बबलू ठाकुर, अमित चौहान, अंशुल बड़गुजर, जिलाध्यक्ष राजेंद्र राजकुमार उपस्थित थे।

सेवानिवृत्ती पर खान का सत्कार

संवाददाता दरेकसा- केंद्र दरेकसा प.स. सालेकसा के सभी शिक्षकों की ओर से केंद्र अंतर्गत जिला परिषद स्कुल चांद सुरज में मुख्याध्यापक पद पर कार्यरत एफ. बी. खान की सेवानिवृत्ती पर सत्कार किया गया। साथ ही केंद्र प्रमुख वाय. एल. उईके का केंद्र दरेकसा में तबादला किया गया। जि.प. चांद सुरज प.स. सालेकसा में गटशिक्षणाधिकारी एस. जी. वाघमारे की अध्यक्षता में उपरोक्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

बिरसी सुरक्षाकर्मियों का आमरण अनशन शुरु

१९ जनवरी से चल रहा आंदोलन

महेंद्र गजभिए– गोंदिया तहसील के अंतर्गत आने वाले बिरसी विमानतल के सुरक्षाकर्मीयो को काम से हटाए जाने के चलते १९ जनवरी से धरना आंदोलन चल रहा है। लेकिन विमानतल प्रशासन व जिला प्रशासन द्वारा इस ओर अब तक अनदेखी किए जाने के चलते १ फरवरी से आमरण अनशन शुरु किया है। आमरण अनशन के दौरान किसी भी सुरक्षाकर्मी को का स्वास्थ्य खराब होने पर इसकी जिम्मेदारी विमानतल प्रशासन की होगी किस प्रकार का पत्र आंदोलनकारियों द्वारा दिया गया है। विशेष यह है कि आंदोलन के दौरान विभिन्न राजनीतिक पक्षों के जनप्रतिनिधियों द्वारा आंदोलनकारियों को भेंट देकर अपना समर्थन दिया है।

शनिवार को शिवसेना के जिला समन्वयक पंकज यादव, सुनील लांजेवर ने भी भेंट दी। साथ जिले के सांसद व विमानतल विकास व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष सुनील मेंडे ने तीन बार समय दिया लेकिन वे अब तक नहीं पहुंचे हैं, जिसके चलते स्थानीय नागरिकों में उनके खिलाफ आक्रोश दिखाई दे रहा है।

गांधी चौक में फहराया तिरंगा

संवाददाता आमगांव– गणतंत्र दिवस की ७२ वी वर्षगांठ नगर के हृदय स्थल गांधी चौक में सामाजिक कार्यकर्ता एवं अजय खेतान मित्र मंडल के मार्गदर्शक - शंभू दयाल अग्रिका के हस्ते एवं गांधी स्मारक समिती के संयोजक-नटवरलाल गांधी की अध्यक्षता में ध्वजारोहण कायक्रम संपन्न हुआ कायक्रम में तहसील पत्रकार संघ के अध्यक्ष- इसुलाल भालेकर, सामाजिक कार्यकर्ता अजय खेतान, कमल बहेकार, रवि क्षीरसागर,सम्पत सोनी, छबू उके ,महेश उके, प्रशांत गायधने, संजय बहेकार, अंकुश अग्रवाल, महेश मेश्राम , रेखलाल टेंभरे आदि बड़ी संख्या में उपस्थित थे कार्यक्रम का संचालन अजय खेतान व आभार प्रदर्शन मित्र परिवार के संयोजक संतोष दुबे ने किया।

संक्षिप्त समाचार

महिला पर ईंट से हमला

सालेकसा पुलिस थाना अंतर्गत आरोपी पति ने पुराने विवाद की रंजिश मन में रख अपनी पत्नी पर ईंट से हमला घायल कर दिया। सुत्रों से मिली जानकारी के अनुसार फर्यादी पत्नी यह आरोपी पति को खान परोस ही रही थी कि आरोपी ने मुझे खाना मत परोस, तेरे हांथ का खान नही खाना है, किसी ओर को खाना परोस ऐसा कहते हुए आवेश में आकर ईंट से हमला कर अपनी पत्नी को घायल कर दिया। फर्यादी की शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ धारा ३२४ के तहत मामला दर्ज किया गया है। मामले की आगे की जांच पुलिसकर्मी सोनबाने कर रहे है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से मौत

रामनगर पुलिस थाना अंतर्गत आनेवाले रिंगरोड बोपचे पेट्रोल के समीप किसी अज्ञात व्यक्ति को अज्ञात वाहन के चालक ने लापरवाही पूर्वक वाहन तेज गति से चलाते हुए टक्कर मार दी। जिसके चलते सर पर लगी गंभीर चोट की वजह से अज्ञात व्यक्ति मौत हो गई। वहीं आरोपी चालक ने इस घटना की जानकारी पुलिस को न देते हुए तथा घायल का बिना उपचार करवाए अपना वाहन लेकर फरार हो गया। डॉक्टरी अहवाल तथा फर्यादी द्वारा की गई जांच के आधार पर धारा २७९,३०४ अ भांदवि के तहत मामला दर्ज किया गया है। मामले की आगे की जांच पुलिस हवलदार मेश्राम कर रहे है।

चोरी का मामला दर्ज

रामनगर पुलिस थाना अंतर्गत आनेवाले आजाद वार्ड, शिव चौक बसंतनगर निवासी फर्यादी सौ. सविता सुरेंद्र उखरे (४०) घर का दरवाजा लगाकर झंडा वंदन के कार्यक्रम में गई हुई थी। इसी दौरान किन्ही अज्ञात चोरो ने दरवाजा तोड़ भीतर प्रवेश किया तथा बेडरुम में मौजुद लकड़ी की आलमारी से सोने चांदी के आभूषण व नगद राशि समेत कुल ९८ हजार का माल लेकर फरार हो गए। फर्यादी की शिकायत पर रामनगर थाने में अज्ञात चोरो के खिलाफ धारा ४५४, ३८० के तहत मामला दर्ज किया गया है।

लाख के गोडाऊन में चोरी

गोंदिया ग्रामीण थाना अंतर्गत आनेवाले ग्राम मोहरानटोली (नागरा) में तीन आरोपियों ने आपसी में सांठगांठ कर फर्यादी अक्षय गिरिश अग्रवाल (२७) निवासी विजयनगर बालाघाट के लाख कंपनी के गोडाऊन में रखा ५१२ किलो चवरी (लाखदाना) कीमत २ लाख ७६ हजार ४८० रुपए का माल आरोपी चुरा ले गए। फर्यादी की शिकायत पर उपरोक्त आरोपियों के खिलाफ धारा ४५७, ३८०, ३४ के तहत मामला दर्ज किया गया है।

धान से भरे बोरो की चोरी

रावणवाड़ी पुलिस थाना अंतर्गत आनेवाले ग्राम बनाथर से ४३ धान से भरे बोरो के कट्टे चोरी हो गए। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम बनाथर निवासी फर्यादी छगनलाल भादुलाल माने (४३) ने अपने मकान के पीछे खुली जगह में ९३ धान से भरे कट्टे रखे थे। जिनमें से ४३ कट्टे चोरी हो गए। जिसकी कीमत ३६ हजार ९४५ रुपए बताई गई। उक्त चोरी ऑटो क्र. एमएच ०७०६ से तीन आरोपियों द्वारा की गई। ऐसी शिकायत किसान द्वारा दर्ज करवाई गई है। शिकायत के आधार पर धारा ३७९, ३४ के तहत मामला दर्ज किया गया है।

विवाहिता ने की खुदकुशी

चिचगढ़ पुलिस थाना अंतर्गत ग्राम फुटाना निवासी भुमाला शिवराज मेश्राम नामक ३५ वर्षीय महिला ने रविवार की रात कुएं में कुदकर आत्महत्या कर ली। घटना के संदर्भ में मिली जानकारी के अनुसार मृतक महिला ने घर में भोजन किया तथा इसके पश्चात परिजनों के साथ सो गई। लेकिन रात में अचानक उठकर वह खेत में गई तथा यहां बने कुएं में कुदकर आत्महत्या कर ली। उसके परिवार में पति एवं १४ वर्षीय एक बेटी है। आत्महत्या के कारण का पता नही लग पाया है। घटना के संदर्भ में पुलिस ने धारा १७४ के तहत मामला दर्ज किया है। मामले की आगे की जांच पुलिस उपनिरिक्षक इस्कापे के मार्गदर्शन में पुलिस हवलदार सौंजाल कर रहे है।

दुर्घटना में युवक की मृत्यु

तिरोड़ा पुलिस थानांतर्गत ग्राम धादरी निवासी राजू सुविचार सतदेवे (३२) दुपहिया वाहन क्रमांक एम.एच. ४९/एन. ६०२७ से जा रहा था कि अचानक रेलवे क्रॉसिंग बौद्ध विहार के पास तिरोड़ा में सड़क दुर्घटना में घायल हो गया। गंभीर रुप से घायल युवक को तिरोड़ा के शासकीय चिकित्सालय में उपचार हेतु भर्ती करवाया गया था। लेकिन हालत में सुधार नहीं होने से उसे नागपुर रेफर किया गया। जहां उपचार के दौरान युवक की मृत्यु हो गई। नागपुर पुलिस से मिली जानकारी के आधार पर तिरोड़ा पुलिस थाने में आकस्मिक मृत्यु का मामला दर्ज किया गया है।

महाराष्ट्र राज्य शिक्षक संघ की सभा संपन्न

संवाददाता अर्जुनी मोरगांव– जिला और तहसील कार्यकारी समिति की आयोजित बैठक में धीरेंद्र कटरे जिला अध्यक्ष और नूतन बांगरे मंडल प्रमुख की उपस्थिति में आयोजित की गई। जिसमें जीपीएफ खाते में जमा की जाने वाली राशि, २०१६-०१७ से प्राप्त जीपीएफ रसीदें, देर से मासिक वेतन, चट्टोपाध्याय वरिष्ठ ग्रेडिंग हड़ताल के दौरान तीन दिन की कटौती के साथ योग्य वेतन और अन्य व्यक्तिगत प्रलंबित मुद्दों पर चर्चा की गई और जिला स्तर से इन मुद्दों को हटाने का आश्वासन दिया गया। जिला अध्यक्ष धीरेंद्र कटरे को दिया गया। इस अवसर पर पर अनिरुद्ध मेश्राम, केदार गोटेफोडे, विनोद लीचडे, हेमंत पटले, विजय डोए, किशोर बावनकर, मयूर राठौड़, गोपीनाथ हुले, वाय.एस. मुंगुलमारे, पवन कोहले, सदानंद मेंढे व जिला और तहसील से महिला भागिनी और प्राइमरी टीचर्स एसोसिएशन के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

अर्जुनी मोरगांव तहसील के ७० ग्राम पंचायतो में सरपंच पद का आरक्षण घोषित

महिलाओं के लिए ३५ सरपंच पद आरक्षित

संवाददाता अर्जुनी मोरगांव– अर्जुनी मोरगांव की कृषी उत्पन्न बाजार समिति के यार्ड में २८ जनवरी को तहसील के ७० ग्राम पंचायतो हेतु सरपंच पद के आरक्षण घोषित किए गए हैं तथा लेहानशु गुरुदेव शहारे (६) ने ईश्वर चिट्ठी निकाली। इस अवसर पर चुनाव अधिकारी तथा तहसीलदार विनोद मेश्राम व चुनाव आयोग के अधिकारी उपस्थित थे।

अनुसूचित जातियों के लिए चापटी महिला, बोरटोला महिला, अरततोंडी महिला, खांबी महिल, कावठा/बोदरा महिला, नवनीतपुर, सिरेगांव महिला, चांनाबाकटी पवनीधाबे महिला, कोहलगांव कोरंगी इन ९२ ग्राम पंचायतो हेतु सरपंच पद आरक्षित रखा गया है। उसी प्रकार अनुसूचित जमाती के लिए येरंडी-देवलगांव, बाराभाटी, नवेगांवबांध महिला, महागांव खमखुर्रा महिला, सोमलपुर महिला, इरपडा येरंडीदरे, ईलदा महिला, कन्हालगांव सायगांव, झासीनगर महिला, बुधेवाडा महिला, रामपुरी, कान्होली महिला, गोठनगांव, भरनोली महिला इन १६ ग्राम पंचायतो के लिए सरपंच पद का आरक्षण घोषित किया गया है।

नागरिको के पिछडे वर्ग प्रवर्ग हेतु ताडगांव महिला, बोंडगांवसुरबन महिला, केशोरी, प्रतापगढ़, कोरंमीटोला महिला, इटखेडा महिला, बाकटी महिला, मांडोखाल महिला, सिरोली, जानवा, बोंडगावदेवी महिला, निमगांव महिला, वडेगांव, पिपलगांव, खांबी, परसोडी महिला, माहुरवुडा, बोरी भिवखिडकी, सावरटोला इन १९ ग्राम पंचायतो के लिए सरपंच पद का आरक्षण किया गया है।

सर्वसाधारण- परसटोल, मोरगांव महिला, मुंगली, कारांडली महिला, महालगांव महिला, सुकली महिला, देवलगांव महिला, धाबेटेकडी आदर्श महिला, दाभना महिला, विहिरगांव महिला, तिडका महिला, अरुणनगर, तुकूमनारायण, वडेगांव रेलवे, कुंभीटोला, येगांव, गुढरी, इसापुर महिला, दिनकर नगर महिला, रामनगर, गौर नगर, सिलेझरी महिला इन २३ ग्राम पंचायतो हेतु सरपंच पद आरक्षित किया गया है।

मोबाइल चोरों का महिला गिरोह हिरासत में

२ लाख ३२ हजार के २५ मोबाइल जप्त

गोंदिया शहर पुलिस थाना अंतर्गत मोबाइल चोरी के एक महिला गिरोह को हिरासत में लेकर विभिन्न स्थानों से चुराए गए २ लाख ३२ हजार के २५ मोबाइल जप्त किए गए, इस प्रकार की जानकारी ३१ जनवरी को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में आयोजित पत्र परिषद में पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे ने दी। आगे उन्होंने बताया कि शहर पुलिस थाना अंतर्गत २९ जनवरी की सुबह मामा चौक निवासी फरियादी माहसिन सैफी शेख के घर से एक सैमसंग कंपनी का व एक विवो कंपनी का मोबाइल अज्ञात चोरों द्वारा चुरा लिया गया। मामला दर्ज कर जांच शुरु किए जाने पर गुप्त जानकारी प्राप्त हुई की गोंदिया रेलवे स्टेशन के समीप खुली जगह पर कुछ महिलाएं संदेहास्पद स्थिति मे मौजूद है। जिस पर शहर पुलिस द्वारा महिला पुलिसकर्मियों के साथ पहुंच कर उनसे पूछताछ की गई तो उनके पास से दो मोबाइल प्राप्त हुए तथा वे छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ के निवासी होना बताया। जिसके पश्चात तीनों महिला आरोपियों से कड़ाई से पूछताछ किए जाने पर तथा शहर पुलिस निरिक्षक महेश बनसोडे द्वारा उनके सामान व आसपास रहने के स्थान की जांच किए जाने पर जगीन में नए गडढे दिखाई दिए जिनमें प्लास्टिक की थैलियों में छुपा कर रखे गए ७ मोबाइल बरामद हुए। कई अन्य स्थानों पर भी जांच किए जाने पर विभिन्न कंपनियों के कुल २५ मोबाइल पाए गए जिसकी कीमत २ लाख ३२ हजार अंदाज बताई गई है।

उपरोक्त मामले में आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर न्यायालय में पेश किया गया जहां आरोपियों को पुलिस हिरासत में भेजा गया तथा पुलिस द्वारा मामले की और अधिक गहराई से जांच की जा रही है। जिससे और चोरियों का खुलासा होने की संभावना है। विशेष यह है कि उपरोक्त महिलाएं अपने साथ छोटे-छोटे बच्चों को साथ में रखती है। तथा मौका देखते ही घरों में घुसकर मोबाइल चोरी करती थी। उपरोक्त कार्रवाई पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे, अपर पुलिस अधीक्षक अतुल कुलकर्णी, पुलिस उपअधीक्षक जगदीश पांडे के मार्गदर्शन में शहर पुलिस निरीक्षक महेश बनसोडे, सहायक पुलिस निरीक्षक विजय राने, पुलिस नायक योगेश बिसेन, ओमेश्वर मेश्राम, सतीश सेडे, प्रमोद चौहान, विजय वेदक, विजय मानकर, महिला पुलिस सिपाही टोडरे द्वारा की गई।

महिला पुलिस उपनिरिक्षक पर लाठी से हमला

तीन आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज, ६ लाख ४४ हजार का माल जब्त

गोंदिया– अवैध शराब व्यवसायियों के खिलाफ कार्यवाई करने पहुंची तिरोड़ा थाने की महिला पुलिस उपनिरिक्षक पर तीन आरोपियों ने सांठगांठ कर लाठी से हमला कर दिया तथा गाली गलौच कर भविष्य में झुठे आरोप में फंसाने की धमकी दी जिससे साफ प्रतित होता है कि जिले में अवैध शराब व्यवसायियों के हौसले बुलंद है तथा वे अब कार्यवाई करने पहुंची पुलिस पर भी हमला करने का साहस कर रहे हैं। पुलिस सुत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ३० जनवरी को तिरोड़ा पुलिस थाने की महिला पुलिस उपनिरिक्षक राधा काशिनाथ लाठे पंचो के समक्ष कानून के तहत शराब की तलाशी लेने आरोपियों के घर गई हुई थी। इसी दौरान तीन आरोपियों ने आपसी में सांठगांठ कर शासकीय काम में बाधा निर्माण करते हुए महिला पुलिस उपनिरिक्षक पर हमला कर दिया तथा गाली गलौच कर आगे झुठे आरोप में फंसाने की धमकी दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए अतिरिक्त पुलिस बल का प्रयोग कर आरोपियों के घर की तलाशी ली गई व तीसरे मंजिल से ८०० सड़वा महुआ फुल, शराब निकाले की सामग्री समेत कुल ६ लाख ४४ हजार ७५० रुपए का माल पुलिस ने जब्त किया। उक्त आरोपियों के खिलाफ धारा ३५३, ३३२, ५०४, ५०६, ३४ (ई) (फ) के तहत मामला दर्ज किया गया।

लाख चोरी के ६ आरोपी गिरफ्तार

गोंदिया– ग्राम नागरा स्थित विजया शेलॅक एंड केमिकल लाख कंपनी के गोडाउन में ५१२ किलो लाख चोरी किया गया था। जिसकी कीमत २ लाख ७६ हजार ४८० रुपए बताई गई। पुलिस ने इस संदर्भ में ६ लोगों को गिरफ्तार किया है। जिसमें काटी बाजारटोला के अनिल जितोते (२५), महेश जितोते (३८), किरनापुर हट्टा निवासी प्रदीप शनिचरे (२६), बाजारटोला के चिंतामन जितोते (२५), दुगेश तुमन्ने (३०), रामपायली के संजू तुमन्ने का समावेश है। इस मामले को लेकर पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे ने तत्काल मामले का खुलासा कर आरोपियों को गिरफ्तार करने के निर्देश दिए थे। जिसके चलते पुलिस ने जांच का दायरा बढ़ाते हुए गुप्त जानकारी के आधार पर ६ आरोपियों को हिरासत में लिया गया तथा आरोपियों ने पुलिस द्वारा की गई पुछताछ में अपना गुनहा कबुल किया। उक्त कार्यवाई पुलिस अधिक्षक विश्व पानसरे, एएसपी अतुल कुलकर्णी, एसडीपीओ जगदीश पांडे के मार्गदर्शन में ग्रामीण थाने की पुलिस निरिक्षक वैशाली पाटिल, उप निरीक्षक सडनेक, कांस्टेबल शरणागत व पारधी ने की।

ग्राम दवनीवाड़ा में हल्दी-कुमकुम के साथ जनजागृती

संवाददाता दवनीवाड़ा– ग्राम दवनीवाड़ा में हलदी कुमकुम का आयोजन कर कन्या भ्रूण हत्या पर जागरुकता को लेकर जिलास्तरीय आयोजन किया गया। डिस्ट्रिक्ट ३२३४ एच-१ की इस वर्ष यह स्पेशल थीम है। डिस्ट्रिक्ट गव्हर्नर संदीप खंडेलवाल का उद्देश्य है कि महिलाएं सभी कार्यक्षेत्रों में सक्षम बने। इस हेतु उनका उचित मार्गदर्शन करने के लिए रॉयल संजीवनी की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्ष योजना कोतवाल की अध्यक्षता में कार्यक्रम की शुरुवात की गई। इस अवसर पर शिखा पिंपलेवार, छाया दसरे, सविता तुरकर, बरखा कनोजिया, माधुरी रहांगडाले, हेमा फतेह, संगीता घोष, सविता बेदरकर व पुजा तिवारी उपस्थित थी। कार्यक्रम में हलदी कुमकुम के साथ वान देने के पश्चात कन्या भ्रूण हत्या पर जनजागृती की गई।

धापेवाडा प्रकल्प के दूसरे चरण के लिए १०० करोड़ की निधि होंगी उपलब्ध -जयंत पाटील

जल्द से जल्द पूरा किया जाए, साथ ही सालेकसा तहसील के बेवारटोला सिंचाई प्रकल्प के काम की त्रुटि दूर कर जल्द से जल्द कार्य शुरु किया जाए ऐसा निर्देश दिया।

इस अवसर पर सांसद प्रफुल पटेल ने कहा कि गोंदिया तहसील की रजेगांव-काटी सिंचाई प्रकल्प करोड़ों रुपए की निधि से तैयार किया गया है। लेकिन प्रकल्प का निर्माण त्रुटिपूर्ण होने से किसानों को सिंचाई से वंचित रहना पड़ रहा है। जिसके लिए इस योजना की त्रुटि दूर कर या प्रकल्प की ऊंचाई २ मीटर बढ़ाकर किसानों को पानी उपलब्ध करवाया जाए। इस पर मंत्री ने कहा कि इस योजना की जल्द से जल्द त्रुटि दूर कर प्रस्ताव पेश किया जाए साथ ही धापेवाडा सिंचाई प्रकल्प का पानी कलपाथरी प्रकल्प में छोड़कर गोरेगांव तहसील के किसानों को किस प्रकार लाभ मिले इस पर भी कार्य किया जाए। आयोजित सभा में सांसद प्रफुल पटेल, विधायक मनोहर चंद्रिकापुरे, पूर्व विधायक राजेंद्र जैन, पूर्व सांसद खुशाल बोपचे, पूर्व जिप अध्यक्ष विजय शिवनकर व सिंचाई विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

रजेगांव-काटी सिंचाई प्रकल्प बांध की बढ़ाई जाएंगी ऊंचाई

गोंदिया– गोंदिया जिले के दौरे पर पहुंचे राज्य के जलसंपदा मंत्री जयंत पाटील द्वारा ३१ जनवरी को सिंचाई विभाग की आयोजित समीक्षा सभा ली गयी। जिसमे जिले के तिरोड़ा तहसील के अंतर्गत आने वाले धापेवाडा सिंचाई प्रकल्प के दूसरे चरण का कार्य युद्धस्तर पर पूर्ण करने के लिए १०० करोड रुपए की निधि उपलब्ध कराई जाएंगी तथा जिले के अन्य सिंचाई प्रकल्प जो अधूरे पड़े हैं उन्हें

क्या आप परेशान हैं?

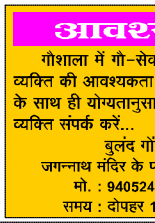

शादी से पहले, शादी के बाद की कमजोरी
उम्र की अधिकता से सेक्स में कमजोरी
नि:संतान, स्वप्नदोष, इंद्रिय का छोटापन
टेढ़ापन, शिथिलता, शुगर से आयी कमजोरी
आदि समस्याओं के ईलाज के लिए...

डॉ.सुशील गेडाम
बी.ए.एम.एस., एस.एच.सी.
धनवंतरी आयुर्वेदिक दवाखाना
शॉप नं.31, राजलक्ष्मी कॉम्प्लेक्स, पाल चौक, गोंदिया

हर रविवार सुबह 11 से 4 बजे

संपर्क क्र.: 7879453857, 8964889608

आवश्यकता है

गोशाला में गो-सेवा के कार्य करने हेतु अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है। रहने व खाने की व्यवस्था के साथ ही योग्यतानुसार वेतन दिया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें...

बुलंद गोंदिया कार्यालय
जगन्नाथ मंदिर के पास, गौशाला वार्ड, गोंदिया
मो. : 9405244668, 7670079009
समय : दोपहर 12 से संध्या 5 बजे तक

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित। संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८। (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है ऐसा नहीं है। न्यायालय क्षेत्र गोंदिया।